International Journal of Jyotish Research: 2016; 1(1): 72-74

International Journal of Jyotish Research
(वेदचक्षु)

ISSN: 2456-4427
Impact Factor: RJIF: 5.11
Jyotish 2016; 1(1): 72-74
© 2016 Jyotish
www.jyotishajournal.com
Received: 04-05-2016
Accepted: 05-06-2016

डॉ. इन्दुमती सिंह
पूर्व शोध छात्रा, संस्कृत एवं प्राकृत भाषा विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, भारत

Correspondence
डॉ. इन्दुमती सिंह
पूर्व शोध छात्रा, संस्कृत एवं प्राकृत भाषा विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, भारत

कालिदास की कृतियों में प्रतिबिम्बित नारी

डॉ. इन्दुमती सिंह

प्रस्तावना

भारतीय इतिहास, साहित्य और परम्परायें इस बात की साक्षी हैं कि भारत की नारी ने जहाँ ममता, कोमलता, प्रेम, स्नेह, महिमा, गरिमा और सेवा–समर्पण की भावना से घर–परिवार के वातावरण को सुन्दर, सुखद और सहज बनाया है तथा अपनी स्नेहशीलता, सहनशीलता, धैर्यशीलता, लज्जाशीलता से समाज में उत्पन्न विभिन्न प्रकार की बुराईयों, कुरीतियों और दुर्भावनाओं का विनाश किया वहीं अपनी धीरता, वीरता और कर्मठता से प्रत्येक कठिनाईयों का निवारण भी किया है।

कालिदास जी की कृतियों में नारी के ये समस्त गुण पूणरूपेण प्रतिविम्वित होते हैं, चाहे वह रघुवंश महाकाव्य की महारानी सुदक्षिणा, इन्दुमती, सीता हो; अभिज्ञान शकुन्तलम् की नायिका शकुन्तला हो; कुमार सम्भव की पार्वती का चरित्र एवं मेघदूत की यक्ष पत्नी यक्षिणी अथवा अन्य जितनी भी कालिदास की कृतियाँ हैं उसमें से किसी भी नारी पात्र को देखा जाय तो समस्त नारी पात्रों का जीवन चरित्र देदीप्यमान व पुरुषार्थ युक्त परिलक्षित है।

कालिदास ने नारी के केवल सौन्दर्य का ही स्निग्ध तथा श्रृंगारपूर्ण चित्रण नहीं किया है, अपितु उनकी कर्तव्यनिष्ठ एवं त्याग का मार्मिक प्रस्तुतिकरण भी अपनी लेचानी के माध्यम से किया है।

यद्यपि कि महाभारत की शकुन्तला को देखा जाय तो वह अपने साथ हुए अन्याय एवं उपेक्षा के प्रति विद्रोही स्वभाव को अपनाती है, अपने अधिकारों के प्रति जागरूक दिखाई देती है। गन्धर्व विवाह हेतु दुष्यन्त के निवेदन पर शकुन्तला विवाह की स्वीकृति देते हुए शर्त रखती है कि आपके अंश से मुझये जो पुत्र उत्पन्न होगा वही युवराज होगा और पुत्र प्राप्ति के पश्चात महर्षि कण्व के आदेश से अपने पुत्र 'सर्वदमन' को लेकर शकुन्तला द्वारा दुष्यन्त के महल में पहुँच कर शर्त का स्मरण कराते हुए 'सर्वदमन– को युवराज घोषित करने का आग्रह करने पर दुष्यन्त द्वारा इन सब बातों को असत्य घोषित कर दिये जाने पर शकुन्तला भरी सभा में सत्य की महत्ता को बताते हुए कहती है कि यदि मेरी बात पर विश्वास नहीं है तो सुनो यह तुम्हारे अंश से उत्पन्न मेरा पुत्र 'सर्वदमन' ही तुम्हारे बाद सम्पूर्ण पृथ्वी का पालन करेगा अर्थात् चक्रवर्ती सम्राट बनेगा और उसे पूर्ण भी करती है। दुष्यन्त शकुन्तला का पुत्र ही आगे चलकर भरत नाम से जाने जाते हैं और उन्हीं के नाम पर इस देश का नाम भारत पड़ा। किन्तु कालिदास की शकुन्तला को सुन्दर, सुशील, कोमल, शालीन, धैर्यशील एवं भाग्य पर भरोसा रखने वाली नारी के रूप में दर्शाया गया है।

कालिदास की रचनाओं में एक अद्वितीय रचना अभिज्ञान शाकुन्तलम में नारी का जो रूप प्रतिविम्वित होता है उसमें अनेकानेक उदात्त गुणों का समूह एकत्र कर एक आदर्श नारी का चरित्र परिलक्षित होता है। एक आदर्श नारी के चरित्र में जितने भी गुण होते हैं वे समस्त गुण शाकुन्तलम् की नायिका शकुन्तला में विद्यमान हैं।

शकुन्तला के अलौकिक सौन्दर्य का वर्णन करते हुए उसकी स्वाभाविक, अकृत्रिम सुन्दरता की बार–बार प्रशंसा करते हुए कहते हैं –

शुद्धान्तमर्दुलभमिदं वपुराश्रमवासिनो जनस्य।
दूरीकृतः खलु गुणै रूद्यानलता वनलताभिः।।[1]
इयमधिकमनोज्ञा वल्कलेनापितन्वी, किमिव
हि मधुराणाम् मण्डनं नाकृत्तीनामा।[2]

इत्यादि वचनों से उसकी अकृत्रिमता, स्वाभाविक सुन्दरता का उल्लेख करते हैं। इतना ही नहीं कालिदास को इतने ही से सन्तोष नहीं हुआ तो उन्होंने पुनः अलौकिक सौन्दर्य के रहस्य को उद्घाटित किया –

मानुषीषु कथं वास्यादस्य रूपस्य संभवः।
न प्रभातरलं ज्योतिउदेति वसुधातलात्।।[3]

शकुन्तला के निश्छल प्रेम एवं पवित्र संस्कारों से युक्त वस्तुतः स्त्रीरत्न सृष्टिरपरा के सौन्दर्य, कोमलता, निष्कलुता एवं पवित्रता का वर्णन एक स्थान पर देखने को मिलता है –
अनाघ्रातं पुष्पं किसलयमूलनं करुरुहै –

रनाविद्धं रत्नं मधु नवमनास्वादित रसम्।
अखण्डं पुण्यानां फलमिव च तद्रूपमनघं
न जाने भोक्तारम् कमिह समुपस्थास्यति विधिः।।[4]

शारीरिक सौन्दर्य के साथ–साथ शकुन्तला का अन्तः सौन्दर्य भी असाधारण है। दुष्यन्त के प्रति आकृष्ट होने पर भी वह स्वयं मुखर नहीं होती।

वाचं न मिश्रयति यद्यपि मद्वचोभिः,
कर्णं ददात्यभिमुखं मयि भाषमाणे।
कामं न तिष्ठति मदानन संमुखीना,
भयिष्ठमन्य विषया न तु दृष्टिरस्याः।।[5]

यहाँ तक कि राजा के महल में भी वह तब तक लज्जा व विनय का त्याग नहीं करती जब तक उसके चरित्र पर आक्षेप नहीं किया जाता है।
करुणा, प्रेम एवं सेवा से युक्त शकुन्तला में नारी की कोमल भावनाओं का समग्र रूप प्रतिविम्वित होता है। मनुष्य को कौन कहे जीव मात्र के प्रति उसका हृदय दया, प्रेम एवं सेवा भाव से ओत–प्रोत है –

पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलं युष्माष्व पीतेषु या,
नादन्ते प्रियमण्डनापि भवतांस्नेहेन या पल्लवम्।
आद्ये वः कुसुमप्रसूतिसमये यस्या भवत्युत्सवः,
सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वेरनुज्ञायताम्।।[6]

शकुन्तला के द्वारा वृक्षों को जल देना केवल कार्य मात्र नहीं समझती है बल्कि वृक्षों के प्रति सहोदर भाईयों जैसा प्रेम करना उसकी करुणा एवं स्नेहाद्रता का ही उदाहरण है। मृगशावक का पालन–पोषण करना उसके घाव पर इंगुदी का तेल लगाना। इसका तात्पर्य है कि शकुन्तला के अन्तःकरण में प्रेम एवं सेवा कूट–कूट कर भरा है –

यस्य त्वया व्रणविरोपणमिङ्गुदीनां,
तैलं न्याषिच्यत मुखे कुशसूचिविद्धे।
श्यामाकमुष्टि परिवर्धितको जहाति,
सोऽयं न पुत्रकृतकः पदवी मृगस्ते।।[7]

शकुन्तला के अन्तःकरण में पवित्रता व पति परायणता, सहिष्णुता एवं क्षमाशीलता जैसे गुण सहज ही प्रस्फुटित होता है। नयी युवावस्था से प्रेरित कामजनित अभिलाषा के अनुरूप आसक्त होकर अपना सर्वस्व अर्पित तो करती है किन्तु पवित्रता के साथ करती है।

दुष्यन्तेनाहितं तेजो दधानां भूतये भुवः।
अवेहि तनयां ब्रह्मन्नग्निगर्भं शमीमिव।।[8]

वास्तव में शकुन्तला की पतिपरायणता इतनी प्रगाढ़ है कि स्वयं दुष्यन्त ही इसका प्रमाण देते हैं – ''कः पतिदेवतामन्यः परामर्ष्टुमुत्सहेत ?'' शकुन्तला अद्भुत सहिष्णुता का परिचय देती है और पति के प्रत्याख्यान (परित्याग) करने पर भी पुत्र के लिए सब कुछ सहन करते हुए पुनः मिलन की आशा रखती है।
अत्यन्त सरल एवं निश्छल हृदय वाली होने पर भी शकुन्तला में विचारशीलता एवं स्वाभिमानी गुण भी विद्यमान हैं। वह दुष्यन्त के प्रति आकर्षित होते हुए भी बिना विचार किये अपना कदम आगे नहीं बढ़ाती है – ''किं नु खल्विमं प्रेक्ष्य तपोवन विरोधिनी विकारस्य गमनीयास्मि संवृत्ता।।'' शकुन्तला का स्वाभिमान उस समय जाग उठता है जब दुष्यन्त द्वारा स्त्री जाति पर आक्षेप करने और परोक्षतः स्वयं के चरित्रहीना कहे जाने पर। पतिपरायणा होते हुए भी रोष के साथ उसकी भर्त्सना करती है – ''अनार्य आत्मनो हृदयानुमानेन पश्यसि। क इदानीमन्यो धर्म कंचुक प्रवेशिनस्तृणच्छन्नकूपोमस्य तवानुकृतिं प्रतिपत्स्यते।।''[9]
जबकि विधाता की सृष्टि स्त्री और पुरुष के संयोग और सहयोग से चलती है और व्यावहारिक दृष्टि से भी यही सत्य है। मालती माधव में भवभूति ने लिखा है –

प्रेयोमित्रं बन्धुतो वा समग्रं, सर्वे कामा शेषधिर्जीवितं वा।
स्त्रीणां भर्ता धर्मदाराश्च पुंसा–मित्यन्योन्यं वत्स वोर्ज्ञातमस्तु।।

रघुवंश महाकाव्य के अन्तर्गत कालिदास ने नारी का जो रूप प्रतिविम्वित किया है वह इस काव्य की अद्वितीयता को परिभाषित करता है। वासतव में नारी के तीन रूप वर्णित किये गये हैं जिसे पुत्री, पत्नी व माता के रूप में हम जानते हैं। रघुवंश महाकाव्य में प्रतिविम्वित नारी का जो रूप (चरित्र) निरुपित किया गया है वह अन्यत्र दुर्लभ है। जिस समय राजा दिलीप नन्दिनी गाय को वन से वापस आश्रम में लेकर प्रवेश करते उसी समय महारानी सुदक्षिणा महाराज व नन्दिनी गाय का स्वागत करने आती है जिसका चित्रांकन करते हुए कालिदास ने जो उपमा दी है[10] –

पुरस्कृता वर्त्मनि पार्थिवेन प्रत्युद्गता पार्थिवधर्मपत्न्या।
तदन्तरे सा विरराज धेनुर्दिनक्षपामध्यगतेव संध्या।।

(मार्ग में राजा दिलीप द्वारा आगे की गई नन्दिनी और उनकी सुदक्षिणा द्वारा ली गई अगवानी के समय नन्दिनी सुदक्षिणा और दिलीप के बीच में दिन और रात्रि के मध्य संख्या काल की भाँति शोभित हुई)
इसी प्रकार राजकुमारी इन्दुमती के सौन्दर्य का वर्णन करते हुए लिखते हैं –

तस्मिन्विधानातिशये विधातुः कन्यामये नेत्रशतैकलक्ष्ये।
निपेतुरन्तः करणैनरेन्द्रा देहैः स्थिताः केवलमासनेषु।।[11]

इसी क्रम में नारी की महत्ता में कालिदास जी ने एक ऐसी अद्वितीय उपमा दे डाली जिसके कारण उपमाकालिदासस्य की उपाधि से उन्हें विभूषित कर दिया गया। जब राजकुमारी इन्दुमती स्वयम्बर के बीच एक–एक करके राजाओं को देखती हुई आगे बढ़ती जाती हैं –

संञ्चारिणी दीपशिखेव रात्रौ यं यं व्यतीयाय पतिंवरा सा।
नरेन्द्रमार्गाट्ट इव प्रपेदे विवर्णभावं स स भूमि पालः।।[12]

नारी की पवित्रता, पतिपरायणता को दर्शाते हुए कालिदास ने लिखा।

तं प्राप्य सर्वावयवानवद्य व्यावर्ततााड़न्योपगमात्कुमारी।
न हि प्रफुल्लं सहकारमेत्य वृक्षान्तरं काङ्क्षति षट्पदालिः।।[13]

कुमार संभवम् में कालिदास ने पार्वती के नख–शिख वर्णन से लेकर आन्तरिक सौन्दर्य ज्ञान, विचार, सेवा, समर्पण, मातृत्व एवं नेतृत्व क्षमता से युक्त समस्त गुणों का ज्ञानात्मक एवं भावात्मक रूप को प्रतिबिम्बित किया है।

पार्वती के अन्यान्य सौन्दर्यों का वर्णन करते हुए सबका सार सर्वस्व एक ही श्लोक में भर दिया –

दिने–दिने सा परिर्वधमाना, लब्धोदया चान्द्रमसीव लेखा।
पुपोष लावण्यमयान्विशेषान् ज्योत्सनान्तराणीव कलान्तराणि।।[14]

नारी के ज्ञानात्मक रूप को प्रतिविम्वित करते हुए कुमार सम्भवम् में लिखा कि पार्वती के अन्दर केवल वर्तमान जन्म का ही नहीं बल्कि पूर्व जन्मों का ज्ञान भी उसी प्रकार प्राप्त हो जाता है जैसे – शरद ऋतु में गंगा के तट पर हंसों की कतार, रात्रि के समय औषधियों में प्रकाश आ जाता है।

तां हंसमालाः शरदीव गंङ्गा महौषधि नक्तमिवात्मवालभासः।
स्थिरोपदेशामुपदेशकाले प्रपेदिरे प्राक्तन जन्म विद्याा।।[15]

एक उत्तम नारी का सर्वोत्तम गुण है सेवा और समर्पण, क्षमाशीलता, मातृत्व व नेतृत्व क्षमता। ये समस्त गुण एक साथ एक नारी पात्र में प्रतिविम्वित करते हुए कालिदास जी कहते हैं – सुन्दर केशों वाली पार्वती ने पूजा हेतु पुष्पों को चुनती हुई वेदिका परिष्कार करने में ध्यान देकर नित्य पूजा कर्म के अनुष्ठान हेतु जल और कुशों को लाकर उनके (शिव) सिर पर स्थित चन्द्रमा की किरणों से थकान दूर करती हुई प्रतिदिन शंकर की सेवा की।

अवचित वलि पुष्पा वेदिसम्मार्गदक्षा,

नियमविजलानां वर्हिषा चोपनेत्री।
गिरिशमुपचचार प्रत्यर्ह सा सुकेशी,
नियमित परिखेदा त्तच्छिरश्चन्द्रपादै।।[16]

इस प्रकार कालिदास जी अपने समस्त कृतियों में नारी को समस्त उत्तम गुणों से युक्त कर प्रतिविम्वित किया है जो निरन्तर नारी जगत के लिए पथप्रदर्शक व मार्गदर्शक का कार्य करेगा।

वेद, पुराण, उपनिषद, साहित्य इत्यादि में पुरुष वर्चस्व का ही वर्णन मिलता है लेकिन कहीं न कहीं स्त्री स्वर भी मिल जाते हैं जैसे राजा जनक के दरबार में याज्ञवल्क्य से गार्गी का शास्तार्थ। महर्षि कण्व के आश्रम के देख–रेख, अतिथि सत्कार शकुन्तला के हाथों में, रघुवंश महाकाव्य में इन्दुमती को स्वयंवर में अपना पति चुनने का अधिकार –

संचारिणी दीपशिखेव रात्रौ, यं यं व्यतीयाय पतिवरा सा।
नरेन्द्रमार्गाट्ट इव प्रपेदे, विवर्णभावं स स भूमिपालः।।[17]

रानी सुदक्षिणा का महाराजा दिलीप की छाया की तरह उनके पीछे–पीछे चलना। जब नन्दिनी गाय को लेकर महाराजा दिलीप घर को लौटते हैं उस समय उनके साथ महारानी सुदक्षिणा भी होती हैं। आगे–आगे महाराज, पीछे–पीछे सुदक्षिणा और बीच में नन्दिनी गाय ''मानो दिन और रात्रि के बीच संध्या'' यहाँ पुरुष के समकक्ष स्त्री को दर्शाया गया है।

कुमार सम्भवम् की पार्वती का सेवा के बल पर भगवान शिव के अर्द्धांग आसन को प्राप्त करना नारी जगत की उत्कृष्टता को दर्शाता। पुत्री के रूप में कालिदास पुत्र से अधिक महत्व पुत्री को देते हुए कहते हैं कि हिमालय राज को पुत्र में मैनाक के होते हुए भी पार्वती को देखे बिना उनकी आँखें तृप्त नहीं होतीं –

महीभूतः पुत्रवतोऽपि दृष्टिः तस्मिन्नपत्ये न जगाम तप्तिम।
अनन्त पुष्पस्य मधेर्हिचूते, द्विस्फमाला सविशेष संङगा।।[18]

वैदिक काल में कहा गया है ''यत्र नायस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता'। इसका सीधा सा अर्थ लगाया जाता है कि जहाँ नारियों की पूजा होती है वहाँ देवता निवास करते हैं। सत्य भी है यदि अपने घर–परिवार समाज व राष्ट्र में नारी का सम्मान करेंगे तो नारी अपनी दक्षता, प्रेम से उस स्थान को स्वर्ग तुल्य बना देगी और यदि नारी का अपमान होगा तो विनाश का कारण बन जायेगी। इतिहास इसका साक्षी है। सीता, द्रोपदी इसकी प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। और कहीं–कहीं वैदिक काल में भी नारियों के स्वाभिमान उनके अस्तित्व पर संकट आया होगा तभी उस समय के समाज को यह कहा गया होगा कि नारी की पूजा करोगे तो देवता निवास करेंगे।

संकट से जूझने और विपरीत परिस्थितियों को चुनौती के तौर पर स्वीकार करने में भी स्त्री सबसे आगे है, क्योंकि उसमें संयम, सब्र और स्वभाव का लचीलापन अधिक होता है। अहं का विसर्जन, सेवा, समर्पण उसे ऊँची चोटी पर पहुँचा देता है। वह शीलता की प्रतिमूर्ति पुत्री, सहनशीलता की देवी पत्नी और ममता की अजस्र स्रोत माँ के रूप में, ऊर्जा की प्रतीक शासिका के रूप में निरनतर परिवार, समाज व राष्ट्र का पथप्रदर्शन करती रहती है।

क्या तुमने सचमुच नारी को तुच्छ निरीह बनाया।
सारा जीवन अर्पित करती फिर भी रहती छाया।।
त्यागमूर्ति नारी, सचमुच ही, साहसमय, उपकारी।
प्रेम, स्नेह, ममता, दुलार की सुन्दर मूर्ति पिटारी।।[19]

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अभिज्ञान शाकुन्तलम् – 1/15
2. अभिज्ञान शाकुन्तलम् – 1/17
3. अभिज्ञान शाकुन्तलम् – 1/22
4. अभिज्ञान शाकुन्तलम् – 2/10
5. अभिज्ञान शाकुन्तलम् – 1/27
6. अभिज्ञान शाकुन्तलम् – 4/9
7. अभिज्ञान शाकुन्तलम् – 4/14
8. अभिज्ञान शाकुन्तलम् – 1/4
9. अभिज्ञान शाकुन्तलम् – 5 अंक, पृष्ठ 238
10. रघुवंश महाकाव्य – 2/20
11. रघुवंश महाकाव्य – 6/11
12. रघुवंश महाकाव्य – 6/67
13. रघुवंश महाकाव्य – 6/69
14. कुमार संभवम् – 1/25
15. कुमार संभवम् – 1/30
16. कुमार संभवम् – 1/60
17. रघुवंश महाकाव्य – 6/67
18. कुमार संभवम् – 1/27
19. जवाहर सिंह परिहार